''मीठे बच्चे – ज्ञान रत्नों की लेन-देन कर तुम्हें ज्ञान से एक-दो की पालना करनी है, आपस में बहुत-बहुत प्यार से रहना है''

प्रश्नः- बीमारी अथवा कर्मभोग होते भी अपार खुशी किस आधार पर रह सकती है?

उत्तरः- विचार सागर मंथन करने की आदत डालो। कोई भी कर्मभोग अथवा बीमारी आती है तो अपने आपसे बातें करो – अब हमने 84 जन्मों का पार्ट पूरा किया, यह पुरानी जुत्ती है। इस पुराने हिसाब-किताब को चुक्तू करना है। फिर हम 21 जन्मों के लिए सब बीमारियों से छूट जायेंगे। कोई बीमारी छूटती जाती है तो खुशी होती है ना।

गीतः- माता ओ माता...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) अपने को मास्टर बीजरूप समझ कर्मेन्द्रियों को समेट शांत में बैठने का अभ्यास करना है।

2) विचार सागर मंथन कर खुशी में रहना है और खुशी-खुशी से पुराना कर्मभोग चुक्तू करना है। अपने आपसे बातें करनी है कि हमने 84 का चक्र पूरा किया, अब जाते हैं बाबा के पास...।

वरदानः- रिगार्ड मांगने के बजाए सदा ऊँची स्थिति में रहने वाले सर्व के पूज्यनीय भव

कई बच्चे सोचते हैं कि हम तो आगे बढ़ रहे हैं लेकिन दूसरे हमको आगे बढ़ने का रिगार्ड नहीं देते हैं। लेकिन रिगार्ड माँगने के बजाए स्वयं का रिगार्ड स्वयं रखो तो दूसरे स्वत: रिगार्ड देंगे। अपना रिगार्ड रखना अर्थात् अपने को सदा महान श्रेष्ठ आत्मा अनुभव करना। जैसे मूर्ति जब आसन पर है तब पूज्यनीय है। ऐसे आप भी सदा अपनी ऊँची स्थिति में स्थित रहो तो पूज्यनीय बन जायेंगे। सब आपेही रिगार्ड देंगे।

स्लोगनः- माया का तिरस्कार करने वाले ही सर्व के सत्कारी बनते हैं।

''मीठे बच्चे – सिर्फ दो अक्षर याद करो – हम हैं सतगुरू पोत्रे जो ब्रह्मा बाप द्वारा दादे का वर्सा लेते हैं''

प्रश्नः- चढ़े तो चाखे वैकुण्ठ रस...यह गायन तुम बच्चों से लगता, दूसरों से नहीं – क्यों?

उत्तरः- क्योंकि तुम्हारे सामने जबरदस्त मंजिल है। तुम बाप के पास परमधाम घर जाते हो, फिर नई दुनिया में आते हो। दूसरे किसी के लिए भी यह गायन नहीं हो सकता है। भल उनमें भी कच्चे-पक्के नम्बरवार होते हैं लेकिन उनके सामने मंजिल नहीं होती। वह वैकुण्ठ रस को जानते भी नहीं। तुम बच्चे ही कहते हो अब हमें उन राहों पर चलना है जहाँ गिरना और सम्भलना है।

गीतः- हमें उन राहों पर चलना है...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) देह-भान को भूलने के लिए जीते जी मरना है। आप मुये मर गई दुनिया। बार-बार इस देह से न्यारा होने की प्रैक्टिस करनी है।
2) हम दादे पोत्रे हैं। हमें लायक बन उनसे पूरा-पूरा वर्सा लेना है। आत्मा को योगबल से पावन बनाना है। खुशी में रहना है।

वरदानः- अशान्ति वा हंगामों के बीच शान्ति कुण्ड की अनुभूति कराने वाले शान्ति स्वरूप भव

जब किसी स्थान पर हंगामा हो, तो उस झगड़े के समय शान्ति के शक्ति की कमाल दिखाओ। सबकी बुद्धि में आये कि यहाँ तो शान्ति का कुण्ड है, शान्ति कुण्ड बन शान्ति की शक्ति फैलाओ, शान्ति स्वरूप होकर शान्ति कुण्ड का अनुभव कराओ। उस समय वाचा की सेवा नहीं कर सकते लेकिन मन्सा से शान्ति कुण्ड की प्रत्यक्षता कर सकते हो। सबको वायब्रेशन आने चाहिए कि बस यहाँ से शान्ति मिलेगी। तो ऐसा वायुमण्डल बनाओ।

स्लोगनः- स्वयं की और सर्व की चिन्ताओं को मिटाना ही शुभचिन्तक बनना है।

''मीठे बच्चे – बाप से जीवनमुक्ति का वर्सा प्राप्त करने के लिए माया के सर्व बन्धनों से मुक्त बनो, यहाँ के जीवनमुक्त ही वहाँ जीवन-मुक्ति पद पाते हैं''

प्रश्नः- इस ज्ञान का बीज अविनाशी है – कैसे?

उत्तरः- इस ज्ञान से सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन होती है, वह राजधानी बहुत बड़ी है, जो आत्मायें एक बार भी ज्ञान ले लेती हैं, भल बीच में छोड़कर चली जायें, फिर वह अन्त में आ जायेंगी, क्योंकि उन्हें भी राजधानी में आना ही है। जिसमें थोड़ा भी ज्ञान का बीज पड़ा है, वह आ जायेगा। जा नहीं सकता। यह बात ही ज्ञान को अविनाशी सिद्ध करती है।

गीतः- भोलेनाथ से निराला...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) सच्चा वारिस बनने के लिए सयाना बनना है, पढ़ाई को अच्छी रीति धारण कर नॉलेजफुल बनना है। बाप समान महिमा योग्य बनना है।

2) विजय माला में शिरोमणी बनने के लिए माया के बंधनों को काटते जाना है। बहुत-बहुत बहादुर बन पवित्र जरूर बनना है।

वरदानः- इच्छाओं रूपी मृगतृष्णा के पीछे भागने के बजाए सच्ची कमाई जमा करने वाले इच्छा मात्रम् अविद्या भव

कई बच्चे सोचते हैं कि अगर हमारे नाम से लॉटरी निकल आये तो हम यज्ञ में लगा दें। लेकिन ऐसा पैसा यज्ञ में नहीं लगता। कई बार इच्छा स्वयं की होती है और कहते हैं कि लॉटरी आयेगी तो सेवा करेंगे! लेकिन अब के करोड़पति बनना अर्थात् सदा के करोड़ गँवाना। इच्छाओं के पीछे भागना तो ऐसे है जैसे मृगतृष्णा इसलिए सच्ची कमाई जमा करो, हद की इच्छाओं से इच्छा मात्रम् अविद्या बनो।

स्लोगनः- विघ्न को विघ्न के बजाए खेल समझकर चलो तो खेल में हँसते गाते पास हो जायेंगे।

''मीठे बच्चे – कोई भी विकर्म करके छिपाना नहीं, छिपकर सभा में बैठने वाले पर बहुत दण्ड पड़ता है इसलिए सावधान, विकार की कड़ी भूल कभी भी नहीं हो''

प्रश्नः- किस लक्ष्य को सामने रखते हुए पुरुषार्थ में सदा आगे बढ़ते रहना है?

उत्तरः- लक्ष्य है – हमें सपूत बच्चा बन मात-पिता के तख्तनशीन बनना है। हर कदम में फॉलो फादर करना है। ऐसी कोई चलन नहीं चलनी है, जिससे कुल कलंकित बनें। ऐसे सपूत बच्चे अपने को यात्री समझ यात्रा में सदा तत्पर रहते हैं। यात्री कभी भी यात्रा पर पतित नहीं बनते, अगर कोई विकार के वश होते हैं तो चकनाचूर हो जाते हैं, सत्यानाश हो जाती है। फिर बहुत दु:खी होते हैं।

गीतः- बचपन के दिन भूला न देना...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) अभी हम यात्रा पर हैं, इसलिए बहुत सम्भलकर चलना है। पवित्र जरूर रहना है।
2) बाप समान निरहंकारी बनना है। हमको बाबा पास जाना है इसलिए सबसे ममत्व निकाल देना है। अपने आपसे बातें कर प्रफुल्लित रहना है।

वरदानः- ''कराने वाला करा रहा है'', इस स्मृति द्वारा निमित्त बन हर कर्म करने वाले बेपरवाह बादशाह भव

चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है – इस स्मृति द्वारा निमित्त बनकर हर कर्म करते चलो तो बेपरवाह बादशाह रहेंगे। ''मैं कर रहा हूँ'' – यह भान आया तो बेपरवाह नहीं रह सकते। लेकिन बाप द्वारा निमित्त बना हुआ हूँ – यह स्मृति बेफिकर वा निश्चिंत जीवन का अनुभव कराती है, कल क्या होगा, उसकी भी चिंता नहीं। उन्हें यह निश्चय रहता कि जो हो रहा है वह अच्छा और जो होने वाला है वह और भी बहुत अच्छा, क्योंकि कराने वाला अच्छे ते अच्छा है।

स्लोगनः- अपने शान्ति और सुख के वायब्रेशन से हर एक को सुख-चैन की अनुभूति कराओ तब कहेंगे सच्चे सेवाधारी।

''मीठे बच्चे – पावन बनने के लिए अपने स्वधर्म में रहो और अशरीरी बन एक बाप को याद करो''

प्रश्नः- किस विधि से नये स्टूडेन्ट्स पर ज्ञान का रंग लग सकता है?

उत्तरः- उन्हें पहले-पहले सात रोज़ की भट्ठी में बिठाओ। कायदा है – जब कोई भी आता है तो उनसे फार्म भराओ। पहले सात रोज़ भट्ठी में पड़े तब पूरा रंग लगे। तुम भ्रमरियां ज्ञान की भूँ-भूँ कर आप समान बनाती हो। तुम जानती हो – अभी देवता धर्म की सैपलिंग लग रही है। जो इस घराने की आत्मायें होंगी वह महा-रोगी से निरोगी बनने के पुरुषार्थ में लग जायेंगी।

गीतः- महफिल में जल उठी शमा...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) विकर्माजीत बनने के लिए सारी पुरानी दुनिया से बेहद का वैराग्य कर, इसे भूल एक बाप की याद में रहना है।
2) भ्रमरी मिसल ज्ञान रंग लगाने की सेवा करनी है। युक्ति से महारोगियों को निरोगी, नास्तिक को आस्तिक बनाना है।

वरदानः- सदा साक्षी स्थिति में स्थित रह निर्लेप अवस्था का अनुभव करने वाले सहजयोगी भव

जो देह के संबंध और देह से साक्षी अर्थात् न्यारे हैं वह इस पुरानी दुनिया से भी साक्षी हो जाते हैं। वे सम्पर्क में आते हुए, देखते हुए भी सदा न्यारे और प्यारे रहते हैं। यह स्टेज ही सहजयोगी का अनुभव कराती है। इसी को कहते हैं साथ में रहते हुए भी निर्लेप। आत्मा निर्लेप नहीं है लेकिन आत्म-अभिमानी स्टेज निर्लेप अर्थात् माया के लेप व आकर्षण से परे है। इस अवस्था में रहने वाले माया के वार से बच जाते हैं।

स्लोगनः- शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा सूक्ष्म सेवा करने वाले ही महान आत्मा हैं।

''मीठे बच्चे – कदम-कदम पर शिवबाबा की श्रीमत लेनी है, अपना सब समाचार ब्रह्मा द्वारा बाप को देना है''

प्रश्नः- एक बाप के बच्चे होते भी कोई प्रीत बुद्धि हैं, कोई विपरीत बुद्धि हैं – कैसे?

उत्तरः- जो बच्चे अपना पूरा कनेक्शन बापदादा से रखते हैं, किसी बात में संशय बुद्धि नहीं बनते हैं, सच्चा-सच्चा पोतामेल ब्रह्मा के थ्रू शिवबाबा को सुनाते हैं वह हैं प्रीत बुद्धि बच्चे। अगर किसी भी बात से ब्रह्मा या ब्राह्मणी से रूठ जाते, चिट्ठी नहीं देते और सोचते – हमारा ब्रह्मा से कोई कनेक्शन नहीं, शिवबाबा को ही याद करना है तो उनकी बुद्धि को माया पकड़ लेती है। वह हैं जैसे विपरीत बुद्धि।

गीतः- मुझको सहारा देने वाले...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) सदा खुश राज़ी रहने के लिए कदम-कदम पर बाप से राय लेनी है। शिवबाबा को ब्रह्मा के थ्रू याद करना है। अपना समाचार देते रहना है।
2) कभी भी किसी बात में संशय नहीं उठाना है। ब्राह्मणी से या ब्रह्मा बाप से रूठकर पढ़ाई नहीं छोड़नी है। सदा प्रीत बुद्धि रहना है।

वरदानः- सुख स्वरूप बन सारे विश्व में सुख की किरणें फैलाने वाले मास्टर ज्ञान सूर्य भव

जैसे बाप ज्ञान का सागर, सुख का सागर है वैसे स्वयं भी ज्ञान स्वरूप, सुख स्वरूप बनो, हर गुण का सिर्फ वर्णन नहीं लेकिन अनुभव हो। जब सुख स्वरूप के अनुभवी बनेंगे तो आप सुख स्वरूप आत्मा द्वारा सुख की किरणें विश्व में फैलेंगी। जैसे सूर्य की किरणें सारे विश्व में जाती हैं वैसे आपके ज्ञान, सुख, आनंद की किरणें जब सर्व आत्माओं तक पहुँचेंगी तब कहेंगे मास्टर ज्ञान सूर्य।

स्लोगनः- दिव्य जन्मधारी ब्राह्मण वह है जो अपने बोल, संकल्प और कर्म से दिव्यता का अनुभव कराये।

''ब्राह्मण जीवन का सबसे श्रेष्ठ खजाना – संकल्प का खजाना''

❖ आज बापदादा चारों ओर के बच्चों के खजानों के खाते देख रहे थे। हर एक बच्चे को खजाने बहुत मिले हैं और अविनाशी अनगिनत खजाने मिले हैं। तो सबसे श्रेष्ठ खजाना संकल्प का खजाना है और आप सबका श्रेष्ठ संकल्प ही ब्राह्मण जीवन का आधार है। संकल्प का खजाना बहुत शक्तिशाली है।

❖ ज्ञान का आधार भी संकल्प ही है। मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ – ये संकल्प करते हो। तो मनन शक्ति का आधार भी संकल्प शक्ति है। धारणा करते हो, मन-बुद्धि को संकल्प देते हो कि आज मुझे सहनशक्ति धारण करनी है तो धारणा का भी आधार संकल्प है। सेवा करते हो, प्लैन बनाते हो तो भी शुद्ध संकल्प ही चलते हैं ना! शुद्ध संकल्प द्वारा ही प्लैन बनता है।

❖ जिनका व्यर्थ चलता है उनकी बुद्धि कमजोर होती है, कन्फ्युज्ड होती है। निर्णय ठीक नहीं होगा। सदा मूँझा हुआ होगा। परेशानी या खुशी गायब होना या मन उदास रहना, अपने जीवन से मज़ा नहीं आना – ये व्यर्थ संकल्प की निशानियाँ हैं।

❖ अगर संकल्प व्यर्थ हुआ तो और खजाने व्यर्थ स्वत: ही हो जाते हैं। तो संकल्प को चेक करो। हल्का नहीं छोड़ो। एक तो बचत करो, वेस्ट के बजाय बेस्ट के खाते में जमा करो और दूसरा अगर बचत नहीं कर सकते हो तो व्यर्थ को समर्थ संकल्पों में परिवर्तन करो।

वरदान:- खुशी के खजाने से अनेक आत्माओं को मालामाल बनाने वाले सदा खुशनसीब भव

खुशनसीब उन्हें कहा जाता जो सदा खुश रहते हैं और खुशी के खजाने द्वारा अनेक आत्माओं को मालामाल बना देते हैं। आजकल हर एक को विशेष खुशी के खजाने की आवश्यकता है, और सब कुछ है लेकिन खुशी नहीं है। आप सबको तो खुशियों की खान मिल गई। खुशियों का वैरायटी खजाना आपके पास है, सिर्फ इस खजाने के मालिक बन जो मिला है वो स्वयं के प्रति और सर्व के प्रति यूज़ करो तो मालामाल अनुभव करेंगे।

स्लोगन:- अन्य आत्माओं के व्यर्थ भाव को श्रेष्ठ भाव में परिवर्तन कर देना ही सच्ची सेवा है।